

का अन्य कार ज्ञान के
सामाजिक अध्ययन या विज्ञान बिना दूसरों की सहायता के प्रगति नहीं कर सकता।

तर्कसंगत और अतर्कसंगत क्रियाओं की अवधारणा (The Concept of Logical and Non-logical Actions)

परेटो ने अपने अध्ययन में समाज में पाई जाने वाली मानवीय क्रियाओं का वर्गीकरण दो भागों में किया है—

(अ) तर्कसंगत क्रियाएँ (Logical actions) तथा ✓

(ब) अतर्कसंगत क्रियाएँ (Non-logical actions)। ✓

परेटो के विचार में इस प्रकार का वर्गीकरण अत्यन्त ही आवश्यक है। आपने इन दोनों प्रकार की क्रियाओं को दो आधारों में बाँटा है। परेटो के मतानुसार तर्कसंगत क्रियाओं का आधार सामान्यतः वस्तुनिष्ठ होता है, जबकि अतर्कसंगत क्रियाओं का आधार व्यक्तिनिष्ठ होता है। इस कारण तर्कसंगत और अतर्कसंगत क्रिया को समझने से पहले 'वस्तुनिष्ठ' तथा 'व्यक्तिनिष्ठ' का अर्थ समझ लेना उचित होगा।

परेटो का कथन है कि प्रत्येक सामाजिक घटना के दो पहलू हो सकते हैं—(1) जैसाकि घटना वास्तव में है और (2) जैसी कि वह किसी व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में अंकित है। प्रथम को परेटो ने 'वस्तुनिष्ठ' तथा द्वितीय को 'व्यक्तिनिष्ठ' कहा है। आपका कथन है कि इस प्रकार का विभाजन बहुत ही आवश्यक है क्योंकि एक केमिस्ट को, जोकि अपनी प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक क्रिया में व्यस्त है, और एक उस व्यक्ति को जो जादू की क्रिया दिखा रहा है, एक ही श्रेणी के अन्तर्गत रखना या मान लेना कदापि उचित न होगा। प्रथम व्यक्ति की क्रिया का आधार वस्तुनिष्ठ है, इस कारण वह वैज्ञानिक है; जबकि दूसरा व्यक्ति केवल व्यक्तिनिष्ठ आधारों पर कार्य करता है।

परेटो के अनुसार वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ आधारों का भेद महत्वपूर्ण, उपयोगी तथा उचित है; फिर भी इन दोनों के बीच कोई दृढ़ विभाजक रेखा खींचना सम्भव नहीं है।

परेटो ने वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ आधारों का और भी स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है कि प्रत्येक सामाजिक या व्यक्तिगत क्रिया के दो पक्ष होते हैं—(1) लक्ष्य, और (2) साधन। हम किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ साधनों का प्रयोग करते हैं; परन्तु ये साधन किस प्रकार के होंगे या उनकी क्या प्रकृति होगी यह उन कार्यों की प्रकृति पर निर्भर करता है जिन्हें कि हम लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए काम में लाते हैं। उदाहरणार्थ, कुछ ऐसे कार्य होते हैं जोकि लक्ष्य तथा साधन दोनों की ही दृष्टि से उचित होते हैं दूसरे शब्दों में, ऐसे कार्य ठीक तथा अनुभवसिद्ध होते हैं एवं तार्किक आधार पर लक्ष्य और साधन के बीच सामंजस्य स्थापित करते हैं। इस प्रकार के यथार्थ तथा तर्कयुक्त कार्यों को वस्तुनिष्ठ कहते हैं। इसके विपरीत, ऐसे भी कार्य होते हैं जिनमें लक्ष्य और साधन के बीच तार्किक संगति का अभाव होता है, अर्थात् ऐसे कार्य जोकि यथार्थ, अनुभवसिद्ध तथा तर्कसंगत नहीं होते हैं, उनको व्यक्तिनिष्ठ कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि परेटो के मतानुसार वे कार्य, जिनका आधार वस्तुनिष्ठ है, तर्कसंगत क्रियाएँ हैं और वे कार्य, जिनका कि आधार व्यक्तिनिष्ठ है, तर्कसंगत क्रियाएँ हैं।

इस प्रकार “परेटो के लिए क्रिया की प्रमुख विशेषता तर्क के साथ उसका सम्बन्ध था।” इस कथन का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक क्रिया का एक तार्किक आधार होता है। यह जरूरी नहीं है कि यह तार्किक आधार सर्वमान्य या सबके द्वारा स्वीकृत या प्रयोगसिद्ध ही हो। हो सकता है कि क्रिया को करने वाले कर्ता के अपने दृष्टिकोण से उस क्रिया का कोई तार्किक आधार हो और उसी तार्किक आधार पर वह अपनी क्रिया का औचित्य दर्शाने या प्रमाणित करने का प्रयत्न करे। परेटो ने इसे ही ‘भ्रान्त-तर्क’ की संज्ञा दी है। इसके विपरीत, यह भी हो सकता है कि एक क्रिया का तार्किक आधार इस प्रकार का हो जोकि वास्तव में प्रयोगसिद्ध हो। और भी स्पष्ट रूप में, ऐसी अनेक क्रियाएँ होती हैं जिनके लक्ष्य तथा साधन के बीच जो सामंजस्य होता है उसे तर्क के आधार पर वास्तव में समझाया जा सकता है, परन्तु ऐसी भी क्रियाएँ होती हैं जिनके लक्ष्य तथा साधनों के बीच पाए जाने वाले तथाकथित सामंजस्य को उन क्रियाओं को करने वाला कर्ता अपने तर्क द्वारा समझा तो अवश्य ही देता है परन्तु वह तर्क वास्तव में भ्रान्त-तर्क ही होता है। इस प्रकार क्रिया का सम्बन्ध तर्क से होता अवश्य ही है, चाहे वह तर्क प्रामाणिक तर्क हो या भ्रान्त-तर्क। जब एक क्रिया प्रामाणिक तर्क (अर्थात् ऐसा तर्क जो केवल कर्ता के दृष्टिकोण से ही नहीं, वरन् उस विषय में अधिक व्यापक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों के दृष्टिकोण से सही है) से सम्बन्धित होती है तो उसे तर्कसंगत क्रिया कहते हैं, और जब क्रिया केवल एक ऐसे तर्क से सम्बन्धित है जोकि केवल कर्ता के दृष्टिकोण से उचित है तो उसे अतर्कसंगत क्रिया कहेंगे। इसीलिए परेटो के मतानुसार क्रिया की किसी भी विवेचना व विश्लेषण में हमें उसके अन्तर्निहित तर्क के सम्बन्ध में भी सचेत रहना चाहिए और यह देखना

चाहिए कि किस प्रकार के तर्क से वह क्रिया सम्बन्धित है, क्योंकि इसी के आधार पर क्रिया की वास्तविक प्रकृति अर्थात् वह व्यक्तिनिष्ठ है या वस्तुनिष्ठ है, यह जानना हमारे लिए सम्भव व सरल होगा। वैसे तो प्रत्येक कर्त्ता के द्वारा निरन्तर यही प्रयत्न होता रहता है कि वह अपने कार्य या क्रिया को इस भाँति सम्पन्न करे कि वह अधिक-से-अधिक मात्रा में वस्तुनिष्ठ ही प्रतीत हो, चाहे वास्तव में वह वैसा भले ही न हो। क्रिया की प्रक्रिया में तर्क का सर्वप्रमुख कार्य एक क्रिया-विशेष के औचित्य को प्रमाणित करना होता है। इस प्रमाण का आधार सदैव वस्तुनिष्ठ ही होगा, इसकी कोई निश्चितता नहीं होती। व्यक्तिनिष्ठ आधारों पर भी क्रिया का औचित्य प्रमाणित किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति जितने भी प्रकार की क्रियाओं को करता है, उन सब क्रियाओं का औचित्य सदैव वस्तुनिष्ठ आधार पर ही दर्शाना सम्भव नहीं होता, बहुधा अपनी क्रियाओं के औचित्य के सम्बन्ध में अपने को तथा दूसरों को समझने के लिए अपनी समझ के अनुसार व्यक्ति अपने तर्क प्रस्तुत करता है। दोनों ही रूप में क्रिया का सम्बन्ध तर्क से हो जाता है। यह बात आगे की विवेचना से और भी स्पष्ट हो जाएगी।

इस प्रकार परेटो के अनुसार, मानवीय क्रियाएँ तर्कसंगत हो सकती हैं और अतर्कसंगत भी। तर्कसंगत क्रिया ही वास्तव में प्रामाणिक होती है क्योंकि इस प्रकार की क्रियाएँ निरीक्षण और अनुभव के क्षेत्र में अन्तर्गत होती हैं। ये इस अर्थ में भी वास्तविक या प्रामाणिक होती हैं कि ये कभी भी काल्पनिक नहीं होतीं; न ही ये अनुमान और अतार्किक आधारों पर आधारित होती हैं। इनका आधार तो वास्तविक तथ्य होता है और इस कारण इनकी परीक्षा वास्तविक अनुभव, निरीक्षण या प्रयोग द्वारा ही हो सकती है। इसीलिए तर्कसंगत क्रियाएँ विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं, जबकि अतर्कसंगत क्रियाएँ काल्पनिक होने तथा निरीक्षण और अनुभवसिद्ध न होने के कारण विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आती हैं, यद्यपि इनका अध्ययन विज्ञान द्वारा होता है।

उक्त लिखित विवेचना से यह स्पष्ट है कि परेटो के अनुसार, “केवल वे क्रियाएँ तर्कसंगत हैं, जोकि तर्कपूर्ण रीति से साधन को लक्ष्य के साथ जोड़ती हैं, केवल उस कर्त्ता की दृष्टि से नहीं जो उस क्रिया को करता है बल्कि उन अन्य व्यक्तियों की दृष्टि से भी जो उसके विषय में अधिक व्यापक ज्ञान रखते हैं।” दूसरे शब्दों में, तर्कसंगत क्रियाएँ वास्तविक रूप में तर्कसिद्ध होनी चाहिए; साथ ही उन क्रियाओं की तर्कसिद्धता केवल उस व्यक्ति के द्वारा ही मान्य न हो जो उस कार्य को कर रहा है, बल्कि अन्य विद्वानों द्वारा भी स्वीकृत होनी चाहिए।

परेटो के अनुसार मानव-क्रियाओं के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि सर्वत्र और सभी कालों में तर्कसंगत क्रियाओं का नहीं, बल्कि अतर्कसंगत क्रियाओं का ही बोलबाला रहा है। दूसरे शब्दों में, मानव की अधिकतर क्रियाएँ अतर्कसंगत होती हैं। ये क्रियाएँ तर्क से नहीं बल्कि एक विशिष्ट मानसिक अवस्था से उत्पन्न होती हैं। इसीलिए उस क्रिया को करने वाला उस क्रिया के पक्ष में अनेक युक्तियाँ पेश करता

है तथा उसे उचित प्रमाणित करने का प्रयत्न करता रहता है। उदाहरणार्थ, सामाजिक निषेध को ही लिया जा सकता है। इस प्रकार के निषेध एक विशिष्ट मानसिक अवस्था की ही उपज होते हैं। साथ ही, वे निषेध उचित हैं, इसे प्रमाणित करने के लिए ईश्वरीय आज्ञा से लेकर पौराणिक गाथा तक का सहारा लिया जाता है। परन्तु वास्तव में इनमें से कोई भी निषेध तर्कसंगत नहीं होता।

तार्किक रूप में इन निषेधों की व्याख्या नहीं की जा सकती है; परन्तु परेटो के मतानुसार इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इस प्रकार के निषेध या अन्य अतर्कसंगत क्रियाएँ आवश्यक रूप में बेकार तथा अनुपयोगी ही होती हैं। एक निषेध का समुदाय-विशेष में महत्त्वपूर्ण स्थान तथा कार्य हो सकता है; जबकि वही निषेध दूसरे समाज या समुदाय के लिए निरर्थक और हानिकारक भी हो सकता है। एक समुदाय-विशेष में कोई सामाजिक निषेध तब पनपता है जबकि किसी कार्य के प्रति उस समुदाय के लोगों का घृणा-भाव हो और वे उस कार्य को उचित और अच्छा न मानते हों। इस कारण इस प्रकार के सामाजिक निषेधों को केवल सामूहिक अभिमति प्राप्त होती है; वे तर्कसंगत नहीं भी हो सकते हैं और बहुधा होते भी नहीं हैं। परन्तु इनको मानने वाले तथा इन्हें लागू करने वाले सभी लोग इनके पक्ष में अनेक तर्कों को प्रस्तुत करते हैं, ताकि उनके अतार्किक रूप छिप जायें या उस विषय में लोग कुछ अनुमान न लगा सकें। परेटो के लिए सामाजिक जीवन की सम्पूर्ण घटना समीकरणों की वह शृंखला है जिसमें कि उस समाज के लोग अपनी अतर्कसंगत क्रियाओं की तर्कसंगत क्रियाओं की वेशभूषा पहनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करने का उत्कट प्रयास करते हैं कि उनकी क्रियाओं का अतर्कसंगत रूप भी उन्हें तथा दूसरों का तर्कसंगत लगने लगे।

इस प्रकार, परेटो के मतानुसार, स्वर्गीय मैक्स हैंडमैन के शब्दों में, “मानव-जाति का इतिहास तर्कसंगत दीख पड़े, इसके लिए किए जाने वाले प्रयासों का एक क्रम है।”

क्रोफोर्ड ने लिखा है कि परेटो के अनुसार एक प्रेरक-शक्ति के रूप में तर्क इतना निर्बल है कि उसके आधार पर कोई प्रभावशाली आचरण का निर्धारण सम्भव नहीं हो सकता। ऐसा इस कारण नहीं हो सकता क्योंकि मनुष्य का व्यवहार ‘क’ किसी अज्ञात मानसिक अवस्था ‘ख’ पर निर्भर होता है, लेकिन इसकी पुष्टि किसी सिद्धान्त ‘ग’ के द्वारा होती है जिसका कि कोई तर्कसंगत सम्बन्ध मानसिक अवस्था ‘ख’ के साथ नहीं होता है। मानव-व्यवहार प्रायः किसी भी तर्क की परवाह नहीं करता है। इसका अपना एक धाराप्रवाह होता है। परन्तु जैसाकि पहले ही बताया जा चुका है, अतर्कसंगत क्रियाओं को आवश्यक रूप से निरर्थक या हानिकारक समझना उचित न होगा। परेटो ऐसी क्रियाओं का भी पर्याप्त महत्त्व प्रदान करते हैं। आपका कथन है कि अतीत के सिद्धान्त-निर्माताओं ने अतर्कसंगत क्रियाओं के महत्त्व को बहुत घटाकर बताया है, क्योंकि उन लोगों ने अतर्कसंगत क्रिया के समस्त जटिल तथ्यों को समझने का तथा उसी आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का कष्ट उठाने की अपेक्षा तर्कसंगत क्रिया के सिद्धान्तों की रचना अधिक सरल पाई। इस प्रकार के विद्वानों में फुस्तेल डी कूलजेस, पॉलिबियस, मेन,